



20वीं शताब्दी में शहडोल जिले के समाजार्थिक विकास परिदृश्य का ऐतिहासिक अध्ययन

¹लेफ्टिनेंट डॉ. राजेश कुमार ठाकुर और ²शिव कुमार हल्दकार

¹शोध निर्देशक एवं सहा.प्रा. इतिहास विभाग, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

²सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

सामाजिक एवं आर्थिक विकास की प्रक्रिया में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के साधन अनिवार्य तत्व और सर्वाधिक सशक्त माध्यम हैं। क्षेत्र में उपलब्ध शिक्षण संस्थान जहाँ समाज को स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्भरता प्रदान करते हैं, वहीं रोजगार एवं व्यवसाय के अवसर आर्थिक विकास को सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं। शिक्षा एवं स्वास्थ्य ही किसी समाज की वह सुदृढ़ नींव है, जिस पर मानवीय एवं आर्थिक विकास की ऊँची इमारतें सफलतापूर्वक निर्मित की जा सकती हैं। अतः इन तीनों आधारभूत क्षेत्रों शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार, के समन्वित एवं संतुलित विकास के बिना किसी भी क्षेत्र की समग्र प्रगति की कल्पना करना संभव नहीं है। विविधता में एकता को समेटे विशाल भारत वर्ष के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी एक पृथक पहचान एवं विशेषता है। प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा, वेशभूषा, जीवनशैली, खान-पान, रीतिरिवाज एवं सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्थितियाँ इत्यादि के कारण वैसे ही है, जैसे किसी माला में भिन्न-भिन्न प्रकार के रत्नों को पिरोया गया है। इनमें से एक रत्न हमारा शहडोल जिला भी एक है, जो अपनी कई विभिन्नताओं के कारण प्रदेश में एक विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्र के आर्थिक विकास का एक सशक्त माध्यम कृषि एवं कृषि आधारित उद्योगों को भी माना जाता है। शहडोल जिला भी कृषि प्रधान जिला है। 20वीं शताब्दी में शहडोल संभाग अंतर्गत आने वाले जिले शहडोल जिले के समाजार्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य के ऐतिहासिक अध्ययन को यहां विश्लेषित किया गया है। शहडोल मध्यप्रदेश का एक सम्भाग और जिला मुख्यालय है। शहडोल जिले की स्थापना 1956 में मध्य प्रदेश के पुनर्गठन के साथ ही की गई थी। शहडोल मध्य प्रदेश के उमरिया, अनूपपुर, सीधी, सतना और छत्तीसगढ़ के कोरबा और बिलासपुर जिलों से घिरा हुआ है। इस जिले की मुख्य नदी सोन और जोहिला है। शहडोल जिले में 6 तहसील-ब्यौहारी, जयसिंहनगर, सोहागपुर, गोहपारु, बुढार और जैतपुर है।

मुख्य शब्द: 20वीं शताब्दी, सामाजिक व आर्थिक विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार का संतुलित विकास, आत्मनिर्भरता, पुनर्गठन।

प्रस्तावना

दक्षिण-पूर्वी रेलवे के बिलासपुर-कटनी खंड पर स्थित शहडोल ने अपने मुख्यालय से इसका नाम व्युत्पन्न किया, यह राज्य के मध्य-पूर्वी भाग में स्थित है, जो मध्य प्रदेश का एक हिस्सा है। जिले का नाम शहडोल अहिर के नाम पर रखा गया था। सोहागपुर गांव, जिसने शहडोल के पूर्व गांव को लगभग 2.5 किलोमीटर तक स्थापित किया था। सोहागपुर से सोहागपुर के पूर्व-ईलाकेदार परिवार के वंशज, जामनी भान, बघेलखण्ड के महाराजा वीरभान सिंह के दूसरे बेटे थे। उन्होंने सोहागपुर में बसने का निर्णय

लिया और आसपास के आश्रयों के लिए अधिकतम सुविधाओं का आश्वासन दिया, और यह भी घोषित किया कि समाशोधन वाले जंगलों द्वारा बसने वाले स्थानों को अग्रणी बसने वालों के नाम पर रखा जाएगा। बाद में, यह जगह रीवा के महाराजा और ब्रिटिश अधिकारियों के दौरे पर शिविर की जगह थी। शहडोल गांव में अधिक गांवों को जोड़ा गया ताकि इस शहर की जनसंख्या में वृद्धि हो सके। सन् 1948 में रियासतों के विलय के बाद जिला मुख्यालय उमरिया से शहडोल में स्थानांतरित कर दिया गया था। शहडोल जिला रीवा संभाग के दक्षिणी भाग का

निर्माण करता हैं।

शहडोल जिले का ऐतिहासिक अध्ययन –

शहडोल जिले का प्राचीन इतिहास अधिक स्पष्ट नहीं है फिर भी जिले में बिखरे हुये प्राचीन भग्नावशेषों से जो कि सोहागपुर और बांधवगढ़ क्षेत्रों में सर्वाधिक है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार नर्मदा घाटी में मैकल श्रेणी के समीप गुप्तकाल के उत्तरार्द्ध में पुष्पमित्र नामक राज्य यहां स्थित था यह राज्य अपने शौर्य पराक्रम और शक्ति से इतना सम्पन्न हो गया था कि इसने गुप्तकालीन शासन व्यवस्था को काफी पीछे ढकेल दिया परिणामस्वरूप गुप्त शासकों को कई दिनों तक रूखा-सूखा खाकर, भूमि में सोकर दिन व्यतीत करना पड़ा। सम्भवतः शहडोल जिले के कुछ भाग निश्चित ही पुष्पमित्र राज्य के अधीन रहे होंगे। मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में बखमढ़ी के निकट सातवीं शताब्दी के शिलालेखों में मानपुरम नाम का उल्लेख है संभव है कि वही बांधवगढ़ तहसील का मानपुर है।

कुछ इतिहासकारों के अनुसार नर्मदा घाटी में मैकल श्रेणी के समीप गुप्त काल के उत्तरार्द्ध में पुष्पमित्र नामक राज्य यहाँ स्थित था। यह राज्य अपने शौर्य, पराक्रम और शक्ति से इतना सम्पन्न हो गया कि इसने गुप्तकालीन शासन व्यवस्था को काफी पीछे धकेल दिया। प्रचलित धारणायें तो यहाँ तक हैं कि तत्कालीन गुप्त शासकों को कई दिनों तक रूखा-सूखा खाकर भूमि पर सोकर ही व्यतीत करना पड़ा था। संभवतः शहडोल जिले का कुछ भाग निश्चित ही पुष्पमित्र राज्य के अधीन रहे होंगे। शहडोल जिला विन्ध्य प्रदेश के अन्तर्गत आता है रामायण के अनुसार विन्ध्य प्रदेश का भू-भाग कौशल प्रान्त के अन्तर्गत था जो शत्रुघ्न के पुत्र शत्रुघाती को प्राप्त विदिशा राज्य की राजधानी कुशावती नगरी थी और केन नदी के किनारे कहीं स्थित थी। महाभारत के अनुसार विन्ध्य प्रदेश के कैमूर पर्वत के उत्तर भाग का रूपप्रदेश व दक्षिण का भाग विराट राज्य के अन्तर्गत था। बौद्ध कालीन युग में यह क्षेत्र “मज्झिम” प्रदेश के अंतर्गत था।

ईसा की बारहवीं शताब्दी में यह क्षेत्र रतनपुर (वर्तमान बिलासपुर) के कल्चुरियों के शासक प्रबन्ध में रहा। हैहयवंश कल्चुरी राजा सोमदत्त ने अपनी राजकुमारी पद्मकुंवरि का ब्याह रचाया बघेल राजा करणदेव के साथ करके बांधवगढ़, बघेलखण्ड की राजधानी रहा। करणदेव का बनाया हुआ बांधवगढ़ में ‘करणपाल’ दरवाजा आज भी मौजूद है। करणदेव के स्वर्गवास (विक्रम संवत्) 1260 के पश्चात् उनके उत्तराधिकारी पुत्र सोमदेव विराटनगरी के उन खण्डहरों को जिनका सौहाग्य देव ने सोहागपुर के नाम से आबाद किया था पूर्ण जीर्णोद्धार कराकर उसका नाम सोहागपुर रखा साथ ही इसके आस-पास अनेक सुन्दर जलाशयों का निर्माण कराया जो आज भी विक्षिप्त अवस्था में आस-पास हैं।^[1] सोहागदे के मृत्योपरान्त (लगभग विक्रम संवत् 1275) इनके उत्तराधिकारी इनके पुत्र सारंगदेव हुए। युवराज काल में इनकी मुठभेड़ परमर्दिदेव चंदेल राजा से हुई जिसके फलस्वरूप उसने

विक्रम संवत् 1268 के लगभग एक बहुत बड़ी सेना लेकर बांधवगढ़ पर चढ़ाई करने के लिए अपने प्रसिद्ध सामन्त ऊदल को भेजा। घोर संग्राम के बाद सारंग देव ने ऊदल को पकड़कर बांधवगढ़ के किले की एक कोठरी में बंद कर दिया था जिसे आज भी ऊदल की कोठरी कहते हैं। वि.सं. 1914 में भारतव्यापी स्वतंत्रता संग्राम ने यहा के ठाकुर गस्ल सिंह ने भाग लिया अंग्रेजी सरकार ने रीवा महाराज रघुराज सिंह की सहायता की। याचना के फलतः देवरा के ठाकुर शिवसक्त सिंह के सेनापतित्व में 30 सवार 300 पयादा, 4 तोपें और 80 गोलअंदाज सोहागपुर के ठाकुर जोगीगढ़ (धन्धा पहार) की ओर अपने साथियों सहित चले गये। सोहागपुर का किला जर्जर कर डाला और यहाँ पर अंग्रेजी फौज का अड्डा बन गया। वि. सं. 1916 में स्वतंत्रता संग्राम समाप्त हो गया। तब महाराजा रघुराज सिंह ने अपने राज्य के छूटे हुए इलाकों की ठाकुरदारी अंग्रेजी सरकार के यहां की फलतः वि. सं. 1917 (20 जनवरी 1960) में कानपुर के दरबार में महाराज रघुराज सिंह को अमरकंटक समेत सोहागपुर और चंदिया, सिंधवाड़ा के इलाके में सहायता देने के उपलक्ष्य में मिले। वि. सं. 1927 में जब महाराजा रघुराज सिंह जगन्नाथपुरी की यात्रा के लिये जा रहे थे, सोहागपुर रास्ते में ही पड़ा, उस समय विजय बहादुर सिंह ठाकुर सोहागपुर में उपस्थित होकर इलाका वापस पाने के लिए प्रार्थना की जिससे महाराज रघुराज सिंह ने बैसाख सुवदी 14 संवत् 1927 में 30 हजार रुपये नजराजा लेकर पाँच हजार रुपये सालाना मामला पर ‘भैया बहादुर’ की पदवी के साथ इलाका सोहागपुर विजय बहादुर सिंह को वापस दे दिया किन्तु इलाके के अन्दर और जो आश्रित इलाके थे उनका संबंध दरबार से ही कायम रहा। वि. सं. 1870 में सोहागपुर के ठाकुर गोविन्द सिंह ने महाराज जयसिंह को एक पत्र लिखा था जिसमें अपने असहायावस्था प्रकट करते हुए सहायता की याचना की।

वि.सं. 1949 में मेजर रॉबर्टसन ने विजय बहादुर सिंह को जो गस्ल सिंह के पुत्र थे 5 हजार रुपये सालाना पर और 18 शर्तों के साथ सोहागपुर इलाका को पाट दिया। वि. सं. 1952 (9 अगस्त 1895) में सुपरिटेण्डेण्ट रीवा राज्य ने नया पाट वंशबहादुर के पुत्र सुखदेव बहादुर सिंह की 18 शर्तों के साथ दिया। इस पाट के अनुसार मालगुजारी वसूली करने के अतिरिक्त तमाम अधिकार दरबार के थे। बैसाख बदी वि. सं. 1985 में महाराज गुलाब सिंह ने 15 शर्तों के साथ राजेन्द्र बहादुर सिंह को नया पाट दिया। इस पाट के अनुसार 10 हजार रुपये मामला इलाके पर कायम था।

इस प्रकार सोहागपुर इलाका विभिन्न शासकों एवं राजाओं के मध्य अधिकार वितरण की प्रक्रिया के माध्यम से 1947 तक भटकता रहा। सन् 1947 के स्वतंत्रता के उपरान्त यह विन्ध्य प्रदेश के अंतर्गत शहडोल जिले के नाम से सम्मिलित रहा और आज मध्यप्रदेश का एक प्रमुख जिला है।

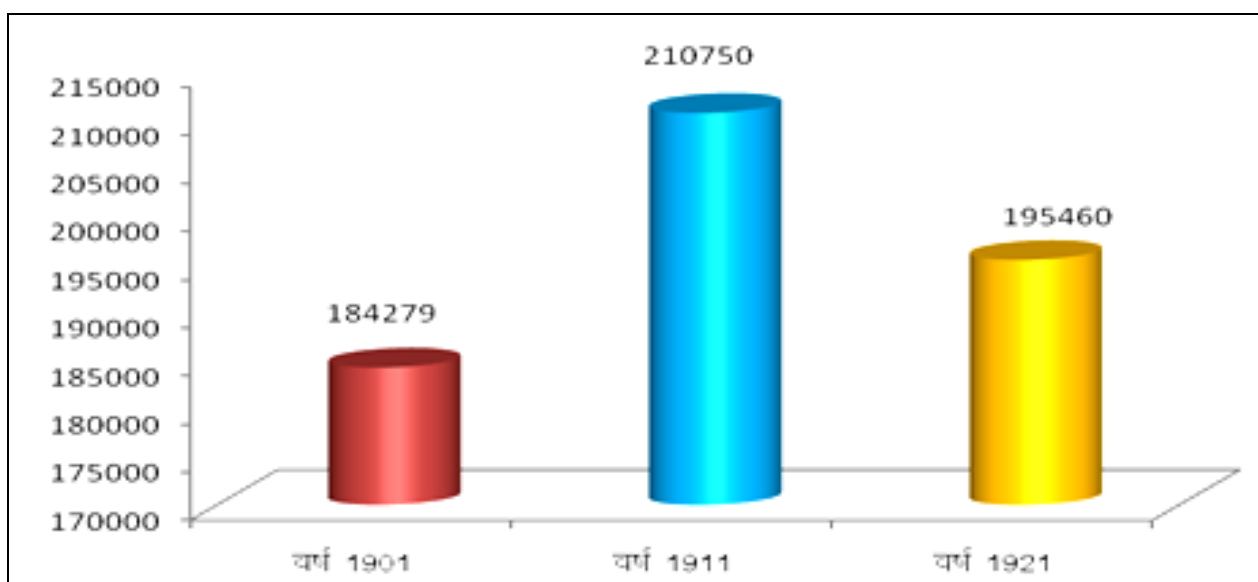
20वीं शताब्दी में शहडोल जिले का समाजार्थिक विकास
समाज विकसित अथवा अल्प-विकसित कैसा भी क्यों न हो, जनसंख्या का प्रश्न उसके लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। जनसंख्या भौगोलिक दशाओं के साथ-साथ सामाजिक उत्पादन का प्राकृतिक आधार होती है, किसी भी समाज में उत्पादक शक्तियों के दिए हुए स्तर पर

जनसंख्या का आकार और उसका गुणात्मक स्तर सामाजिक संपत्ति की मात्रा और धारणीय विकास की संभावनाओं को निर्धारित करता है। अतः जनसंख्या समाजार्थिक विकास का अत्यंत महत्वपूर्ण कारक होती है। जिले में सन् 1901 से 1921 के बीच जनसंख्या को निम्न तालिका के माध्यम से समझा जा सकता है:-

तालिका 1: तहसीलवार जनसंख्या जिला शहडोल

जिला/तहसील	वर्ष 1901	वर्ष 1911	वर्ष 1921
तहसील- ब्यौहारी	33038	46120	39538
तहसील-बांधवगढ़	41684	47631	48762
तहसील- सोहागपुर	35961	37637	34591
तहसील-पुष्पराजगढ़	73596	79362	72569
जिला शहडोल	184279	210750	195460

स्रोत: आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, म.प्र. शासन भोपाल।



दण्डारेख 1

उपर्युक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शहडोल जिले की जनसंख्या वर्ष 1901 में जहां 184279 थी वहीं वर्ष 1911 में बढ़कर 210750 हो गयी किन्तु वर्ष 1921 में जनसंख्या घटकर 195460 हो गयी, जिसका मुख्य कारण वर्ष 1921 में पड़े अकाल, महामारी को माना जा सकता है।

सन् 1920 के पश्चात् शहडोल जिले की जनसंख्या –
जान आर्इ. क्लार्क महोदय के अनुसार जनसंख्या भूगोल जनसंख्या के वितरण, संघटन, प्रवास तथा वृद्धि की क्षेत्रीय विभिन्नताओं को स्थानों की प्रकृति के विभिन्नताओं

से सम्बंधों की व्याख्या करता है। इस तरह क्लार्क महोदय जहां एक ओर जनसंख्या के मात्रात्मक और गुणात्मक पक्षों के अध्ययन पर बल देते हैं, वहीं दूसरी ओर जनसंख्या के क्षेत्रीय अभिमुखता को भी महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। जनसंख्या भूगोल जनसंख्या में प्रादेशिक अंतरों को उसके भौतिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक पृष्ठभूमि में समझने का प्रयास करता है।

जिले के आर्थिक विकास में कार्यशील जनसंख्या की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्ष 1961 से वर्ष 2011 तक मुख्य एवं सीमांत कार्यशील जनसंख्या का विवरण निम्न तालिका में प्रदर्शित है।

तालिका 2: शहडोल जिले की मुख्य कार्यशील जनसंख्या (वर्ष 1961 से 2011) (संख्या प्रतिशत में)

क्रं.	1961	1971	1981	1991	2001	2011
कुल मुख्य एवं सीमांत कार्यशील जनसंख्या	85.8	36.46	35.56	40.6	43.3	46.25
(1). मुख्य काम करने वाले	21.85	2.12	3.54	70	66.4	22.59
(2). सीमांतक काम करने वाले	45.31	42.68	47.83	28.9	33.6	23.66
(3). काम न करने वाले	32.84	23.44	34.23	47.9	56.7	53.75
(1). काश्तकार	-	49.94	40.75	35.5	39.1	19.43
(2). खेतिहर मजदूर	-	3.44	2.5	39.6	35	52.53
(3). पारिवारिक उद्योग	-	14.29	18.01	2.6	2.6	2.91
(4). अन्य काम करने वाले	-	-	-	19.5	23.3	25.14

स्रोत: DISTRICT CENSUS HANDBOOK PART - A & B, District Shahdol, Directorate of Census Operations, Madhya Pradesh and Chhattisgarh, p- 15.

20वीं शताब्दी में शहडोल जिले का कृषि विकास:-

शहडोल मुख्यतः कृषि क्षेत्र है, जहां खाद्यान्नों, दालों, इमारती लकड़ी, बीड़ी-निर्माण के लिए तेदूंपत्ते, वनोपज के रूप में महुआ, पटसन आदि उत्पन्न होता है। भूतकाल में जिले का निर्यात व्यापार उल्लेखनीय नहीं था। किन्तु वर्ष 1870 में रेलवे लाइन की शुरुआत होने से शहडोल जिले का महत्व बढ़ गया। रेलवे के कारण यहां पर न केवल व्यापार का विकास हुआ बल्कि आर्थिक रूप से

प्रगति का प्रारम्भ भी हुआ। जिले से देश के भीतर ही नहीं अन्य राज्यों के साथ विदेशों में भी भारी मात्रा में गेहूं एवं चावल का निर्यात किया गया। इसके परिणामस्वरूप जिले की सम्पन्नता में तीव्रता से वृद्धि हुई। वर्ष 1951-52 से वर्ष 1960-61 तक शहडोल जिले में बोयी गयी फसलों का विवरण निम्न तालिका के माध्यम से अवलोकित किया जा सकता है:-

तालिका 3: शहडोल जिले में उत्पादित फसलों की स्थिति (वर्ष 1951-52 से 1960-61 तक) (क्षेत्रफल एकड़ में)

वर्ष	चावल	गेहूँ	ज्वार	कुल		
				अनाज और बाजरा	दालें	खाद्यान्न
1951.52	388382	50281	45710	654523	91336	745859
1952.53	415939	44131	46006	694322	87882	782204
1953.54	416779	59865	47042	752652	99739	852391
1954.55	399294	60855	46584	766214	104985	871199
1955.56	420329	72369	50004	837610	124400	962010
1956.57	441732	81347	50106	825395	128429	953824
1957.58	450990	35708	53171	763174	82652	845826
1958.59	445633	66817	51723	829371	113230	942601
1959.60	460521	81341	53518	868550	123174	991724
1960.61	474494	87179	53059	875878	121182	997060

स्रोत: जिला जनगणना पुस्तिका, शहडोल, वर्ष 1961, पृ. 336।

उपर्युक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शहडोल जिले में कृषि का विकास निरंतर प्रगति कर रहा है। वर्ष 1951-52 में जहां चावल का बोया गया रकबा 388382 था वहीं वर्ष 1961-61 में फसल का रकबा बढ़कर 4,74,494 एकड़ हो गया। इसी प्रकार गेहूँ का बोया गया क्षेत्र वर्ष 1951-52 में जहाँ 50281 था वहीं वर्ष 1961-61 में बढ़कर 87179 एकड़ हो गया। ज्वार के बोये गये कुल रकबे की स्थिति जहां वर्ष 1951-52 में 45710 एकड़ थी वहीं वर्ष 1961-61 में बढ़कर 53059 एकड़ हो

गयी। इसी प्रकार अनाज और बाजरा, दालों व खाद्यान्न के उत्पादन का क्षेत्रफल भी वर्ष 1951-52 से 1960-61 तक निरंतर रूप से बढ़ते क्रम में दृष्टिगोचर हो रहा है अर्थात् स्वतंत्रता पश्चात् शासन द्वारा प्रारम्भ की गयी पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से कृषि के विकास को नवीन आयाम प्राप्त हुआ।

आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार शहडोल जिले का 74 प्रतिशत भाग कृषि पर आधारित है। जिले की प्रमुख फसलों में धान, गेहूँ, मक्का, ज्वार आदि को माना जाता

है। इसके अलावा अन्य रबी एवं खरीफ की फसलों का भी उत्पादन किया जाता है। अतः वर्ष 1997-98 से वर्ष 2010-11 तक शहडोल जिले के कुल क्षेत्र में बोयी जानी

वाली उपज एवं उत्पादन की स्थिति को निम्न तालिका के माध्यम से समझा जा सकता है।

तालिका 4: शहडोल जिले की प्रमुख फसलों की स्थिति

क्रं.	वर्ष	धान			गेहूँ		
		क्षेत्रफल (000 हेक्टेयर)	उत्पादन (000 मेट्रिक टन)	उपज (कि. ग्रा/हेक्टेयर)	क्षेत्रफल (000 हेक्टेयर)	उत्पादन (000 मेट्रिक टन)	उपज (कि. ग्रा/हेक्टेयर)
1	1997-98	244	152.9	659	72.8	50.1	716
2	1998-99	205.6	132.4	679	46.3	34.6	779
3	1999-2000	214.5	195.8	961	47.4	30.3	666
4	2000-01	204.3	142.5	734	31.2	20.3	680
5	2001-02	208.4	191.7	968	36.6	25.8	734
6	2002-03	203.5	105.8	547	31.8	19.4	636
7	2003-04	107.4	103.6	1016	21.1	16.6	820
8	2004-05	110.1	76.9	735	21.3	16.4	803
9	2005-06	108.7	104.4	1011	24.1	19.9	859
10	2006-07	108.3	85.3	829	22.9	17.8	807
11	2007-08	107.9	62.3	829	21.2	18	807
12	2008-09	107.2	92.1	607	23	20.7	887
13	2009-10	101.2	82.9	862	24.1	16.9	938
14	2010-11	100.9	129	1346	24.6	17.1	727
15	2011-12	104	191	1938	27	49	1849
16	2012-13	112	222	2088	28	69	2492
17	2013-14	102	356	3489	48	135	2804
18	2014-15	113	333	2939	56	106	1898
19	2015-16	98	246	2513	31	69	2215
20	2016-17	116	426	3674	53	90	1694
21	2017-18	99	205	2091	29	63	1982
22	2018-19	141.9	293.9	2070	464.1	112.5	2424
23	2019-20	153.2	517.8	3379	647.7	160.9	2413
24	2020-21	167.9	567.5	3379	742.3	139.5	1879
25	2021-22	178.4	447.9	2515	692.8	144.8	2089
26	2022-23	178.9	467.9	2615	744.9	155.7	2089

स्रोत: http://mpkrishi.mp.gov.in/hindisite_New/compendium2005-06_new.aspx

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शहडोल जिले की प्रमुख फसल धान के बोये जाने वाले क्षेत्रफल में वर्ष 1997-98 से वर्ष 2022-23 तक शहडोल जिले की प्रमुख दो फसलों धान एवं गेहूँ का विवरण प्रस्तुत किया गया है। जिले में वर्ष 1997-98 में जहाँ धान का रकबा मात्र 244 हजार हेक्टेयर था वहीं वर्ष 2022-23 में घटकर 178.9 हजार हेक्टेयर हो गया। इसी प्रकार गेहूँ की फसल का रकबा जहाँ वर्ष 1997-98 में 72.8 हजार हेक्टेयर था वह वर्ष 2022-23 में बढ़कर 744.9 हजार हेक्टेयर हो गया अर्थात् गेहूँ फसल के उत्पादन की स्थिति जिले में बेहतर परिलक्षित हो रही है।

शहडोल जिले में शिक्षा का विकास:-

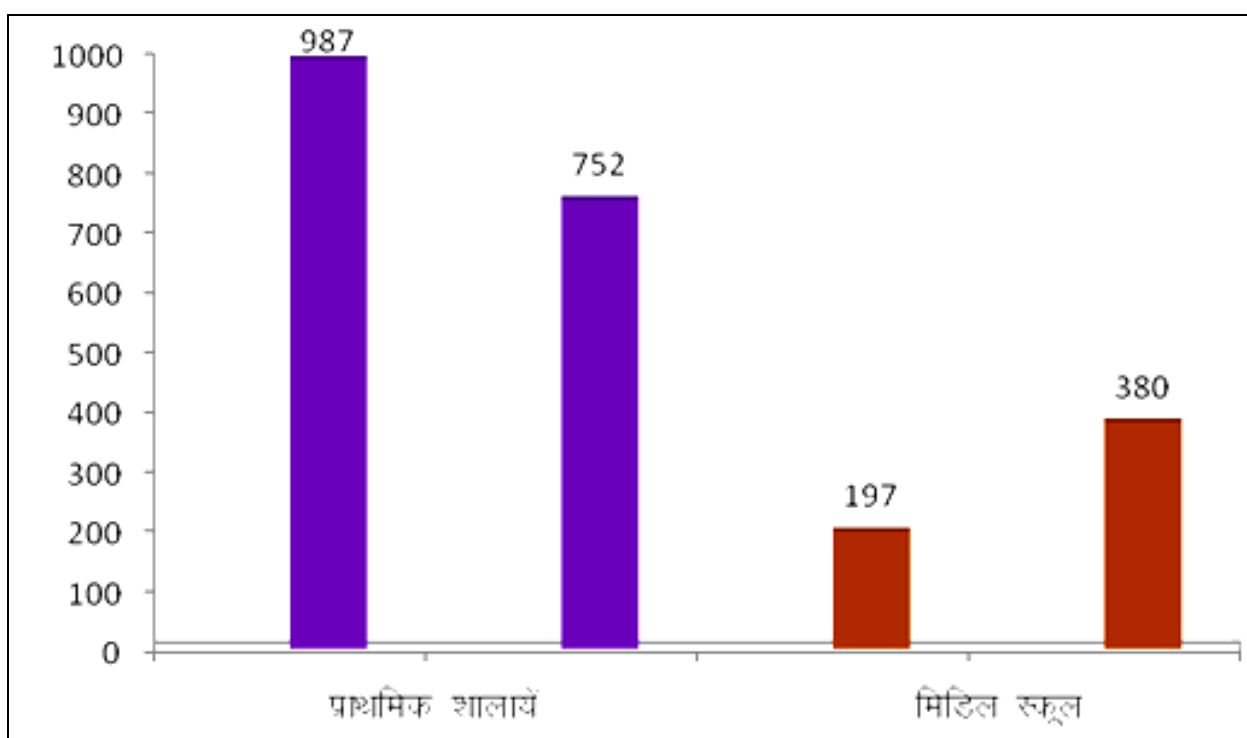
सन् 1901 में, भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड कर्जन ने सितम्बर, 1901 ई. में, शिमला में एक शिक्षा सम्मेलन का आयोजन किया था, जिसे 'शिमला शिक्षा सम्मेलन' के नाम से जाना जाता है। इस शिक्षा सम्मेलन में कुल 150 प्रस्ताव पारित किए गए थे। इस सम्मेलन में शिक्षा के प्राथमिक स्तर में कुछ परिवर्तन किए गए। परीक्षा परिणामों के अनुसार सहायक अनुदान के भुगतान की पद्धति समाप्त कर दी गई और उसके स्थान पर नियत अनुदान की पद्धति आरम्भ की गई। इससे पहले परीक्षा परिणाम के आधार पर अनुदान का भुगतान किया जाता

था। वर्ष 2001 से वर्ष 2011 तक शहडोल जिले के तालिका के माध्यम से समझा जा सकता है:-
विकासखण्डवार शिक्षण संस्थाओं की स्थिति को निम्न

तालिका 5: शहडोल जिले में विकासखण्डवार प्राथमिक एवं मिडिल स्कूलों की स्थिति

स.क्र.	विकासखण्ड	प्राथमिक शालायेँ		प्रति एक लाख जनसंख्या पर प्राथ.शालाओं की संख्या	मिडिल स्कूल		प्रति एक लाख जनसंख्या पर मिडिल स्कूल की संख्या
		2001	2011		2001	2011	
1.	ब्यौहारी	210	125	66	42	79	42
2.	जयसिंहनगर	214	187	101	47	84	45
3.	सोहागपुर	185	148	79	40	72	38
4.	पाली नं. 1	135	110	102	24	62	57
5.	बुढ़ार	243	182	102	44	83	47
	योग:-	987	752	89	197	380	45

स्रोत: जिला सांख्यिकी पुस्तिका, शहडोल, वर्ष 2001 एवं 2011।



दण्डारेख 2

शहडोल जिले के विकासखण्डों में उपलब्ध प्राथमिक विद्यालयों की संख्या के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2001 में जिले में प्राथमिक विद्यालयों की कुल संख्या 987 थी, लेकिन वर्ष 2011 में कुल विद्यालयों की संख्या घटकर 752 हो गई है। वर्ष 2011 में प्रति लाख जनसंख्या पर प्राथमिक विद्यालयों की उपलब्धता पाली क्रमांक 1 और बुढ़ार विकासखण्ड में सबसे अधिक और ब्यौहारी विकासखण्ड में सबसे कम है। शेष विकासखण्डों में प्रति लाख जनसंख्या पर प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति मध्यम क्रम में परिलक्षित होती है। सम्पूर्ण जिले में प्रति लाख जनसंख्या पर ऐसे विद्यालयों की औसत संख्या

89 थी। इसी प्रकार मिडिल स्कूलों की स्थिति को दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि वर्ष 2001 में मिडिल स्कूलों की संख्या 197 थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर 380 हो गई। वर्ष 2011 में प्रति लाख जनसंख्या पर मिडिल स्कूलों की औसत संख्या 45 है। वर्ष 2001 में जयसिंह नगर विकासखण्ड में मिडिल स्कूलों की सबसे ज्यादा संख्या 47 थी जबकि पाली क्रमांक 1 में सबसे कम संख्या 24 थी। वर्ष 2011 में यह सर्वाधिक जयसिंह नगर विकासखण्ड में 84 थी किन्तु सबसे कम संख्या पाली क्रमांक 1 विकासखण्ड में 62 थी।

तालिका 6: शहडोल जिले में विकासखण्डवार माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शालाओं की स्थिति

स.क्र.	विकासखण्ड	हाईस्कूल		प्रति एक लाख जनसंख्या पर माध्यमिक शालाओं की संख्या	उच्चतर माध्यमिक शालायें		प्रति एक लाख जनसंख्या पर उच्च. मा. शालाओं की संख्या
		2001	2011		2001	2011	
1.	ब्यौहारी	19	18	9.57	14	20	10.63
2.	जयसिंहनगर	13	12	6.48	9	10	5.4
3.	सोहागपुर	12	16	8.54	6	8	4.27
4.	पाली नं. 1	8	14	12.95	4	6	5.55
5.	बुढ़ार	12	18	10.12	6	9	5.06
	योग:—	64	78	9.21	39	53	6.26

स्रोत: जिला सांख्यिकी पुस्तिका, शहडोल, वर्ष 2001 एवं 2011।

शहडोल जिले में प्रति लाख जनसंख्या पर माध्यमिक शालाओं की औसत संख्या 9.21 है। वर्ष 2001 में माध्यमिक शालाओं की संख्या 64 थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर 78 हो गई। विकासखंडवार देखा जाये तो पाली क्रमांक 1 विकासखंड में प्रति लाख जनसंख्या पर माध्यमिक शालाओं की संख्या सबसे अधिक है, जबकि जयसिंह नगर विकासखंड में माध्यमिक शालाओं की संख्या सबसे कम है। जयसिंहनगर और सोहागपुर विकासखंड को छोड़कर सभी विकासखंडों में प्रति लाख जनसंख्या पर माध्यमिक शालाओं की संख्या वर्ष 2011 में जिले के औसत से अधिक है।

उच्चतर माध्यमिक शालाओं में कक्षा 11वीं एवं 12वीं तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। जिले में प्रति लाख आबादी पर उच्चतर माध्यमिक शालाओं की औसत संख्या केवल 6.26 है। इसका आशय यह है कि प्रति लाख आबादी पर केवल 6 उच्चतर माध्यमिक शालाओं की सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र में इन शालाओं का स्थानिक वितरण एक समान प्रतीत नहीं होता है। इसकी सबसे अधिक सांद्रता ब्यौहारी विकासखंड में देखने को मिलती है, जबकि सोहागपुर विकासखंड में सबसे कम सांद्रता है। वर्ष 2001 में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 39 थी, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 53 हो गई।

किसी भी क्षेत्र में उच्चस्तरीय शिक्षा प्रदान करने के लिए डिग्री कॉलेज एवं विश्वविद्यालय स्थापित किए जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2011 की स्थिति में उच्च शिक्षण संस्थाओं की संख्या मात्र 07 थी, जिसमें 01 डिग्री कॉलेज ब्यौहारी विकासखंड में (पं. रामकिशोर शुक्ल स्मृति शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय ब्यौहारी), 01 जयसिंहनगर विकासखंड में (शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय जयसिंहनगर), 02 सोहागपुर विकासखंड में (शासकीय इंदिरा गांधी गृह विज्ञान महाविद्यालय एवं शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोहागपुर) तथा 03 बुढ़ार विकासखंड में (शासकीय महाविद्यालय जैतपुर, शासकीय नेहरू डिग्री कॉलेज बुढ़ार एवं शासकीय महाविद्यालय केशवाही) डिग्री कॉलेज संचालित थे। सोहागपुर विकासखंड (शहडोल शहर) में मात्र एक विश्वविद्यालय स्थित है जिसका नाम पं. शंभूनाथ शुक्ल

विश्वविद्यालय है, जो उच्च शिक्षा की सुविधा प्रदान करता है। अध्ययन क्षेत्र में डिग्री कॉलेज एवं विश्वविद्यालय के अतिरिक्त 05 अन्य व्यावसायिक शिक्षण संस्थायें भी संचालित थीं। 01 ब्यौहारी विकासखंड में, 03 सोहागपुर विकासखंड में तथा 01 बुढ़ार विकासखंड में स्थित है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत ऐतिहासिक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहडोल जिले का सामाजार्थिक विकास परिदृश्य समय के साथ उल्लेखनीय परिवर्तनों से गुजरा है। स्वतंत्रता पूर्व की स्थिति की तुलना में वर्तमान समय में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, तथापि आदिवासी बहुल एवं वनांचल क्षेत्र होने के कारण जिले को अभी भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

शहडोल जिले में कृषि एक प्रमुख व्यवसाय है, हल्दी की खेती को 'एक जिला एक उत्पाद' के तहत चुना गया है, जो किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बना रहा है। कृषि के आधुनिकीकरण एवं गुणवत्तापूर्ण बीजों की उपलब्धता के चलते कृषि के विकास को उत्तरोत्तर गति प्राप्त हो रही है, किन्तु चूंकि इस संभाग में आदिवासियों की बाहुल्यता के कारण आज भी इस वर्ग के कृषकों द्वारा पुरानी पद्धति से ही कृषि कार्य किया जा रहा है, आधुनिकीकरण का प्रभाव एवं जागरूकता का अभाव आज भी वर्ग के लिए एक चिंता का विषय है। यद्यपि राज्य शासन द्वारा इस वर्ग के लोगों को पर्याप्त सुविधायें व संसाधन मुहैया कराने पर प्रतिबद्ध है किन्तु इस वर्ग के लोगों तक इन सुविधाओं का न पहुंच पाना यक्ष प्रश्न बना हुआ है।

जिले में कृषि व शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, जिससे साक्षरता दर के साथ-साथ समाज की जागरूकता में वृद्धि हुई है। जिले में राज्य शासन द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता एवं रोजगार के परंपरागत एवं आधुनिक साधनों में परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। इसके साथ ही कुछ चुनौतियाँ भी हैं जिसमें प्रमुख रूप से भौगोलिक दुर्गमता, संसाधनों की असमान उपलब्धता, जैसे कारक जिले के समग्र विकास में बाधक सिद्ध हो रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कुमार, डॉ. प्रमिला: मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2003, पृष्ठ 54.
2. डॉ. राधेशरण, भारत की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना और संस्कृति के मूल तत्व (आदिकाल से 1950 ई. तक), म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, वर्ष 2001।
3. पाण्डेय, श्रीधर, आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, वाराणसी, वर्ष 2010।
4. शुक्ल, आर.एल., आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, वर्ष 2006।
5. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, जिला शहडोल, वर्ष 2022।
6. जिला विकास पुस्तिका, शहडोल वर्ष 1997, 1998, 1999, 2009, 2010, 2012, 2013।
7. भारत की जनगणना 1991, श्रृंखला-13, मध्यप्रदेश, जिला जनगणना पुस्तिका, भाग ग-क एवं ख, शहडोल जिला, जनगणना कार्य निदेशालय भोपाल, 1995।
8. *Census of India 2001, Madhya Pradesh, Administration Atlas*, Directorate of Census Operations, M.P., 2007.
9. *Census of India 2001, Series-24: Madhya Pradesh, Final Population Totals*, Directorate of Census Operations, Bhopal, M.P.
10. मध्यप्रदेश का आर्थिक सर्वेक्षण, 2020-21, आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, मध्यप्रदेश।